वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 36	Year 3	Volume 12	September 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 4

विचार

संस्कार

संस्कार कोई कर्मकाण्ड नहीं है कि किसी पण्डित को घर में बुलाया हवन पाठ करवाया और दक्षिणा दे कर खत्म हो गया। संस्कार का कर्मकाण्ड से कोई मतलव नहीं। संस्कार है बच्चों में ऐसे गुण भरना जिनसे उनका आचरण और व्यवहार जीवन भर सब को सुख देने वाला हों। न केवल अपने ही घर में अपितु जब वह अपने घर से निकलकर दूसरे स्थान या घर में भी चले जायें, तब भी उनका आचरण और व्यवहार दूसरों को सुख देने वाला हों। ।

प्रश्न उठता है कैसे दिये जायें संस्कार ? आज के समय में बच्चों को संस्कार माता पिता ही दे सकते हैं और यह करने के लिये पहले माता पिता को वही बनना होगा जो वे बच्चों को बनाना चाहते हैं। बच्चे बातें सुनने की बजाये, आचरण से प्रभावित होते हैं। जब संस्कार की बात आती है तो पांच बातें जो कि माता पिता को अपने बच्चों के सामने आचरण के तौर पर अवश्य रखनी चाहिये वे हैं

गुरू गोबिन्द सिंह के सपुत्र जोरावर सिंह और फतह सिंह अगर हंसते हुये शहीद हो गये तो यह उनके माता पिता के दिये हुये सस्कार ही थे।

1 सदैव सत्य बोलना

2 चाहे कैसी भी परिस्थिति हो क्रोद्ध नहीं करना।

3 घर में अपने से बड़ो की सेवा करना।

3 अपनी कमाई को शुद्ध रखना।

3 जिन्दगी के सुखद और चुनौतीपूर्ण अनुभवों को बच्चों को बताना। ताकी वह मुश्किल परिस्थतियों में घबरा न जायें और साहस और चरित्र का परिचय दें।

यदि बच्चे यह सीख गये कि

Contact / सम्पर्क करें :

Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047

Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,

E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन्दगी में पैसा ही सब कुछ नहीं बल्कि उपर उठने के लिये, सुखमय जीवन के लिये और मन की शान्ति के लिये अच्छा चरित्र सब से आवश्यक चीज है तो यह मान लीजिये कि आपने अपने बच्चे को अच्छे संस्कार दे दिये हैं, और वह जीवन में असफल नहीं होगा।

बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने के लिये सत्संग बहुत सहायता करता है। इस के लिये सब से उत्तम है कि बच्चे को अच्छे आचरण वाले विद्वानों के विचार सुनने को मिलें। यहां विद्वता से भी अधिक महत्व आचरण पर दिया गया है। आज के समय में जब पैसा ही खुदा है, विद्वान चाहे मिल जायें पर ऐसे न के बराबर हैं जिनका आचरण भी अच्छा हो। यदि किसी कारण से यह सम्भव नही तो अच्छी कितावों का अध्यन करवाया जाये। यह अवश्यक नहीं कि हम अपने देश या धर्म की पुसतकें ही पढ़े। अच्छी बातें हर देश, जाति और धर्ममें है। पर जो चीज सब से प्रभावशाली वह है कि माता पिता बच्चें के सामने अपना आचरण बहुत अच्छा रखें।

पुराने समय में युनान ने बहुत से महान दार्शनिकों को जन्म दिया, उन्ही में एक थे सोलोन। एक बार सोलोन एक गला सड़ा सेब लेकर सब से यह प्रश्न पूछते––यह गला सड़ा सेब फिर से ठीक कैसे हो सकता है? किसी के पास भी इसका उत्तर नहीं था क्योंकि सब यह सोचते थे कि गले सड़े सेब का क्या प्रयोग हो सकता है यह तो दूसरे सेबों को भी खराब कर देता है। पर सालोन को ऐसे ही यूनान के सब से बुद्धिमान व्यकितयों में स्थान प्राप्त नहीं था। उस ने उस सढ़े हुये सेब में से बीज निकाले और सब को दिखाते हुये बोला––यदि इन बीजों को धरती में बो दिया जाता है तो हमें नये पेड़ों से फिर से ताजे और स्वस्थ सेब प्राप्त होंगे। इसी तरह छोटे बच्चे भी मानव के बीज होते हैं। उनकी वैसे ही देख रेख करने की आवश्यकता है जैसे कि बीज बो कर छाटे पाद्धों की करते हैं।

यह बहुत आवश्यक है कि संस्कारों के नाम पर हम अपने बच्चों को कुछ कर्मकाण्ड सिखाने की बजाये अच्छा आचरण, अच्छा आहार व्यवहार, चरित्र और विचार सिखायें, जिसको की अंग्रेजी में good & pleasing manners and etiquete कहा गया है। इनकी कोई भाषा नहीं होती यह universal हैं। बच्चों का चरित्र वैसा ही बन जायेगा जैसा कि माता पिता बनाते हैं। इस बारे में दीना नगर मठ के स्वामी स्वतनत्रानन्द द्वारा बताई एक कहानी मुझे सदैव याद रहती है।

एक बहुत ईमानदार तहसीलदार से स्वामी जी ने पूछा कि इस व्यवसाय में जहां कि काम करवाने वाले बिन मांगे, खुद ही रिश्वत देते हैं, वह कैसे भ्रष्टाचार से अछूता है। उसने यूं बताया–––––– मैं जब पटवारी बना ही था, तो मैने अपनी रिश्वत की राशी में से 40 रूप्ये अपनी विधवा मां, जिसने की दूसरों के घरों में बर्तन मांज कर उस को पाला था, को भेज दियें। उस समय पटवारी का वेतन बहुत कम होता थां मां को संदेह हुआ कि अभी जब कि उस की नोकरी को लगे एक दो महीने ही हुये हैं, उस ने कैसे इतनी बड़ी राशी उस को भेज दी। ज़रूर वह रिश्वत लेता है। मो ने तुरन्त वह राशी अपने लड़के को वापिस भेज दी और साथ में यह भी लिख भेजा–––अगर उसे पता होता कि उसका बेटा पढ़ लिख कर रिश्वत लेने वाला बनेगा तो वह उसे अपना पेट काट कर ना पढ़ाती। ऐसी कमाइके पैसे लेने से तो वह भूखा रहना पसन्द करेगी। जब मां का यह पत्र आया तो मैं बहुत दुखीः और शर्मिंदा हुआ व प्रण किया कि मां के दिखाये ईमानदारी के रास्ते पर ही चलुंगा।

वास्तविकता यह है कि माता पिता का आचरण और चरित्र बच्चों के उपर सब से अधिक प्रभाव डालता है। जो 25–30 साल की आयु के बाद आदतें बदलना इतना आसान नहीं रहता। बड़े लोग बात सुनते हैं सिर हिलाते हैं पर अपने को बदलने की कोशिश नहीं करतें। इसके मुकावले बच्चों को बदलना कहीं आसान हैं जिस समाज में बच्चे न हीं और केवल बूढ़े ही बैठे हों वहां किसी भी तरह का उपदेश देना समय की बरवादी है। इस लिये अच्छाई को फैलाने के लिये ऐसे समाज को चुने जहां बच्चे हों। बच्चे ही कल के नेता होते हैं

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

सदबुद्धि किसे कहते हैं

सुखदा रानी सरना

सदबुद्धि की पहली पहचान है ईश्वर पर यह अटूट विश्वास होना कि वह न्यायकारी और दयावान है। ईश्वर के तीन गुण स्वभाव हैं––सत्य, दया और न्यायकारी। सत्य ऐसे कि वह सर्वव्यापक है। हमारे बिन बोले ही सब के मन की बात जानता है। हमें उस पर पूरा भरोसा होना चाहिये। दूसरा वह दयावान और मंगलकारी है। वह किसी को दुख नहीं देता। यहि कोई व्यक्ति यह महसूस करता है कि उसे दुख मिल रहा है तो उसे समझना चाहिये कि यह तो उसके बुरे कर्मो का ही फल है। वह ईश्वर तो न्यायकारी होने के कारण यह देखता है कि उसकी न्यायव्यवथा में सब को उसके कर्मो का उचित फल मिले।

हमें इस बात को समझकर संतोष होना चाहिये कि सब कुछ मेरे कर्मो का फल है न कि किसी दूसरे ने मुझे इस परिस्थिति में डाला है। न कोई मुझे मार सकता है और न ही दुख दे सकता है। दुनिया में बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो यह सोच कर कि मेरे दुख का कारण कोई दूसरा व्यक्ति है, अपने को तो दुखी रखते हैं पर दूसरे के प्रति भी घृणा द्वेष की भावना रखते है। प्रारब्ध में जाति, आयु और भेग शामिल होते हैं। मानव योनि बहुत मुश्किल से मिलती हैं। इसे सुधारने का अवसर मनुष्य योनि में ही मिलता है। इस योनि में अच्छे कर्म कर मानव अपने स्तर को और बढ़ा सकता है। यदि यह मानव का देह पाकर भी मनुष्य अच्छे कर्म नहीं करता है तो यह उसकी बदकिस्मती है। पश, पक्षी और कीड़ों की योनि में यह सुधार सम्भव नहीं क्योंकि ये सभी तो भोग योनियों हैं।

हमें क्या योनि मिलेगी, क्या आयु होगी और क्या हम भोग पायेंगे, यह सब ईश्वर के हाथ में है। आयु मानव घटा या बढ़ा नहीं सकता। श्वास कितने हैं, यह सब ईश्वर के हाथ है। एक और बात, ईश्वर मानव के कर्मा का फल कम या अधिक नहीं करता, कारण वह न्यायकारी है और सब के लिये न्यायकारी है।

विषय विकार तो मानव के लिये बन्धन हैं। काम , कोद्ध, लोभ, मोह और अंहकार से मनुष्य न केवल दूसरे को दुख पहुंचाता है बल्कि अपने जीवन को भी दुखमय बनाता हैं।

मानव अच्छे कर्म करता हुआ, ईश्वर पर पूरा विश्वास रखे, सब के प्रति प्रेम की भावना रखे, सब जीवों के लिये दया करूणा का भाव हो, साकारातमक सोच रखें। ऐसे में वह खुद भी सुखी होगा और दूसरों को भी सुखी रखेगा। यही सद बुद्धि है।

नाम, प्रसिद्धि, अभिन्नदन, पैसे के ईच्छा रखने के स्थान पर दूसरों की सेवा करने का मौका देखते रहें। वही असली प्रसन्नता आपको दे सकता है।

सच्चाई से भागना ही भय है

डा. महेश पोरवाल

भय व्यक्ति का सब से बड़ा शत्रु है। यह भय कई प्रकार का है। कभी जो हमारे पास धन सम्पदा है उसे खोने का भय है, कभी प्रेमी जनों को खोने का भय है, कभी यह भय है कि हमारी ईज्जत व सम्मान खत्म न हो जाये, कभी यह भय है कि मर जाने के बाद मेरे परिवार या व्यवसाय का क्या होगा, अक्सर ऐसे ही भय हमें चिन्तित रखते है और जब व्यक्ति चिन्तित होता है तो स्वभाविक है खुश भी नहीं रह सकता। यूं कहें कि भय और आपकी प्रसन्नता एक दूसरे के शत्रु हैं तो गलत नहीं होगा।

किसी ने सत्य ही कहा है

भय के कारण ही कोध आता है,

कोध के कारण ही द्वेश जन्म लेता है,

द्वेश से ही व्यक्ति के दुख जन्म लेते है।

असली ज्ञान प्राप्ती है अपने आप को भय से स्वतन्त्र करना

क्या कारण है जो यह तरह तरह के भय हमें सताते रहते हैं? क्या सभी भयभीत रहतें हैं या कुछ कम और कुछ अधिक? इसके समझने के लिये एक उदाहरण पेश कर रहा हूं। आपके शहर में एक डाक्टरों की टीम आई हुई है जो कि एक टैस्ट कर के बताती है कि क्या आप को कैंसर होने की सम्भावना है। हम में अधिक उस टैस्ट को नहीं करवायेंगे। कारण एक भय कि कहीं ऐसा न हो कि टैस्ट की रिपोर्ट यह खुलासा कर दे कि हमें कैंसर होने की सम्भावना है। इस से एक बात तो जाहिर है कि सच्चाई से आंखें मूंदना ही हमारे भय का कारण है। और यही है अपने आप से भागना।

हमारे श्शरीर के रोगों का ईलाज तो डाक्टर कर सकते हैं पर यह जो भय का रोग है इस का ईलाज शरीर के डाक्टर के पास नहीं है। इस का ईलाज तो अध्यात्मबाद ही कर सकता है। इस अध्यातमबाद का पहला नियम कहता है कि इस संसार में जो कुछ भी है वह ईश्वर का है, जो कि उसने मानव के प्रयोग के लिये बनाया है। मानव इस का प्रयोग तो कर सकता है पर इस का स्वामी नहीं बन सकता। इतिहास बताता है कि कि सिकन्दर जैसे महान योद्धा सारा संसार विजयी कर भी इस के मालिक नहीं बन सके। कहते हैं सिकन्दर बहुत ही युवा अवस्था में ऐसे रोग से बिमार हो गया जिसका ईलाज किसी के पास नहीं था। जब उसका अन्तिम समय नजदीक आया तो उसने अपने धर्म गुरू से कहा कि जब मेरा जनाजा ले जाया जाये तो मेरे हाथ कफन से बाहर रखना ताकी सब को यह मालुम हो जाये कि सारे संसार को फतह करने वाला सिकन्दर अपने साथ कुछ नहीं ले गया। कहने का अर्थ यह है कि इस संसार की हर चीज का स्वामी केवल ईश्वर है जो कि हमें प्रयोग के लिये देता है न कि इनका स्वामी बनने के लिये, चाहे वह राजा है या भिखारी। यह ज्ञान सिकन्दर को उस समय हुआ जब वह मृत्यु के नजदीक था, पहले इस लिये नहीं हुआ क्योंकि भौतिकवाद को सब कुछ मानकर उसने अध्यात्मवाद के नजदीक जाने की आवश्यकता ही महसूम नहीं की। जो हाल सिकन्दर का था वही आज के मानव का है। वह भौतिक वस्तुओं को पाने और संग्रह करने की होड़ में इतना व्यस्त रहता है कि वह अध्यात्मवाद को कुछ समय देना भी समय की बरवादी समझता है।

ऐसे में पहले तो बहुत सा जीवन का समय भौतिक वस्तुओं को पाने और संग्रह करने में लग जाता है और बाकी समय इस भय चिन्ता में कि कही कोई इसे ले न जाये। अध्यात्मवाद के ज्ञान के बिना सामने इन्तजार करती मृत्यु को भी नहीं देखता। जैसे बिल्ली को देखकर कबूतर आंखे मूंद लेता है वैसे ही आंखे मूंद लेता है। यही है अपने आप से भागना या सच्चाई से भागना और इस सच्चाई को न जानना ही भय का कारण है। जो व्यकित इस सच्चाई से वाकिफ हो जाता है कि मेरे पिछले जन्म के अच्छे कर्मो के कारण ही ईश्वर ने मुझे मानव का अनुपम चोला दिया है इस लिये कि मै उस के द्वारा बनाये इस सुन्दर विश्व का आनन्द उठाउं, उसके द्वारा दी गई वस्तुओं का प्रयोग अपने व दूसरों के सुख के लिये करू । मैने यहां सदा के लिये नहीं रहना। जब भगवान तुल्य श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण और दूसरी पुण्य आत्मायें नहीं रही तो मैं भी एक दिन मृत्यु को प्राप्त हूंगा। कछ भी मेरे साथ नहीं जाना है सिवाये मेरे अच्छे कर्म। इस लिये इस भौतिक सम्पदा का मालिक बनने के जगह, अपने कर्मो को अच्छा बनाओं। यह सत्य है कि जो मृत्यु को सदैव ध्यान में रखता है, वह तेजी से सोचता है, तेजी से कार्य करता है, फलतः लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर होता है व शीघ्र मन्जिल को पाता है।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि परमात्मा हमें हर प्रकार के भय से दूर रखें

अभय करो प्रभु, अभय करो हमें।

भूमी से न भय हो, आकाश से न भय हो।

मित्रों से न भय हो, शत्रु से न भय हो।

भय हो न सामने से, पीछे से न भय हो।

दायें से न भय हो , न वायें से ही भय हो।

दिन में न भय हो , न रात में ही भय हो।

शत्रु मेरा कोई न हो, सब ही दिशाएं मेरी मित्र बनें।

भय न हो, मित्रता की जय हो।

व्द की यह प्रार्थना इस बात को बताती है कि भय व्यक्ति का सब से बड़ा शत्रु है।

Live in the world but let not worldliness live in you. Nothing, belongs to you. Everything is given to you by God for use — you use it wisely when you share it with those in need.

इस दंनिया में रहते हुये, इस संसार की चीजों का मालिक बनने की ईच्छा और कोशिश न करें। इस दुनिया में कुछ भी आप का नहीं है, ईश्वर ने हर चीज आपको प्रयोग के लिये दी है। उसका प्रयोग करे पर स्वामी न बने। दूसरा प्रयोग करते हुये यह ख्याल रखें की ईश्वर की दी हुई, बनाई हुई वस्तुये आप के लिये ही नहीं सब के लिये हैं। उन के साथ बांटें। मालिक बनने की ईच्छा और कोशिश न करें।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

Is astrology for real?

Om Swami

Tens of millions of people visit astrologers for various reasons. Out of those millions, a few thousand email me every year. Often, they write to me when they are worried about something their astrologer has told them about the future. And, generally, the same fortune teller also tells them some *upaya*, remedy, like wear this stone or do this or do that, and the impending doom will be taken care of. Often (not always though), the prescribed remedy has a monetary value too. This is where the astrologer profits.

If they charge you for giving you a remedy, they profit from it directly. If they tell you to do something where no money is involved, they gain from it indirectly by winning your trust. You think, this is a good astrologer. He has no vested interest, he stands to gain nothing from it. But, the truth is today he's telling you a "free" remedy, tomorrow he'll tell you a paid one. Or, to *you* he's giving a free amulet and he'll charge the next reference client you will bring to this good fortune teller.

I'm not suggesting that all astrologers are out there to dupe you. On the contrary, there are many who are well-read, wise and intuitive. There are good ones too who genuinely believe in their systems of prediction. Unfortunately, that doesn't necessarily mean the system is genuine.

If there's any way to change your destiny then it is by working on yourself. Everything falls in place then. Gems and stones, totems and trinkets, and what have you, cannot change the course of time. If your marriage is on the rocks then both partners have to work on it. If you are under debt then you've got to cut down your expenses and increase your income. Wearing a certain stone or pacifying a certain planet is not the answer, if you ask me.

Besides, in the classical texts of astrology, there's nothing called *upaya* or a "remedy".

Astrology is broadly categorized into two types: calculative astrology (*ganit jyotish*.) and predictive astrology (*phalit jyotish*. *phalita jyōtiṣa*). Calculative or computational astrology is a branch of astronomy and is primarily concerned with the movement of planets and stars. Predictive astrology is about the impact of such movements on you as an individual. There are no "*upayas*" or

remedies. There is nothing called if you do this or that then you could avoid such and such incident. (I say this based on two things. One, there's not a classical text on astrology that I haven't read. And, two, for many years, I professionally practiced astrology.)

Does that mean you should discard every solution prescribed by an astrologer? I'm not saying there's no truth to astrology. I'm only suggesting that remedies etc. are all fluff. Think of them as placebo (to be used for psychological advantage.) It hasn't anything else to offer. And, let me tell you my simple principle. **If anyone ever creates fear in you, be that person an expert astrologer, a religious authority, a preacher or swami etc., it's a good time to**

COMMUNICATION SKILL

Prof. S.P. Puri

A man's character may be learned from the adjectives which he habitually uses in conversation.--Mark Twain Take advantage of every opportunity to practice your communication skill so that when important occasions arise, you will have the gift, the style, the sharpness, the clarity and the emotions to affect other people.--Jim Ronn The most important thing in communication is hearing what isn't said. --Peter Drucker

To be able to talk well is a great mental acquisition, an accomplishment that is superior to all others. It enables you not only to make a good impression upon strangers but to keep friends and accord a hearty welcome to all sort of company. It sends you clients patients and customers. The ability to express yourself with ease or eloquence interests others immediately by the communication skill, gives you an instant advantage over one who may know more than you but cannot express with the same eloquence. The charm of a good conversationalist is felt immediately anywhere.

Most of the young men who are jealous of their mates as are progressing faster than they, keep on wasting their precious time in small talk, saying nothing but the frivolous and frothy things which are devoid of humour in them, but a talk that diminishes the ambition and lowers the self dignity.

A prince and a peasant may be dressed alike but the moment they open their lips, you know who is who. Our conversation at once shows our culture, finesse and breeding. How much one speaks is unimportant but what one speaks matters the most. In a discussion, a well-bred person will invariably express his opinion briefly and succinctly without monopolizing the entire conversation. However, keeping mum throughout is only an ornament of fools.

Shri Puri is a retired Prof. from the Physics department of Punjab University

continued from page 6

abandon him or her. It is so easy to bank on fears. For your own good, if you wish to lead a life of freedom, don't give anyone the right to instill fear in you.

Let me sum it up for you, nevertheless: I never consulted astrology before taking any major or minor decisions in my life. Whether that was starting or naming a business, buying a house or moving to a new country, investing in a company or embarking on a new journey. I just did what suited my schedule. I only consult the lunar calendar for some of my spiritual practices to honor certain traditions.

If astrology could solve your problems, why would an astrologer's life have any problems at all? Why would they fall ill or have wayward children? Why would they struggle financially or go through divorces? Something for you to think about.

Do you think that the world's most powerful, richest people, the greatest minds, inventors, philosophers, scientists, entrepreneurs went around consulting astrologers or fortune tellers? Please wake up and look within you for all answers. Take control of your time and act accordingly. That's all that matters at the end of the day.

Have faith in yourself, in your God. Do the right thing, make the right choices, be compassionate and don't give up. You won't have to worry about astrology then. Instead, you'll carve your way through adversities and obstacles like a river moves through earth and stones.

सम्पादकिय

अन्धविश्वासों के कारण दुखी भारत के लोग

ऐसी बहुत सी घटनायें रोज सामने आती हैं जो कि चीख चीख कर यह कहती हैं कि इस देश का भला तब तक नहीं जब तक कि लोग पाखण्डों और अन्धविश्वासों में फसे हुये हैं। अभी हाल में घटी तीन घटनाये मैं आप को इस बारे में बताना चाहता हूं। पहली घटना आप सभी जानते हैं,पिछले महीने की 14 तारीख को आन्ध्र प्रदेश में घटी। गोदावरी नदी में महापुषकरम के मौके पर आये स्नान करने वाले लाखों श्रधालुओं की भीड़ बेकाबू हो गई और 40 के करीब लोगों की

अगर कोइ मुझ से पूछे कि कारण क्या है तो मेरा सीधा जवाब है आज हमारे धर्म गुरू या धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर पाखण्ड, अन्धविश्वास, और जटिल कर्मकाण्ड ही लोंगों को बेचते है, और हमारे देश में इस की खुली छूट है।।

इस बारे में हमारा वैदिक धर्म क्या कहता है **मैं वैदिक विचारक और लेखक श्री** कृष्ण चन्द्र गर्ग के शब्दो में ही बता रहां हूं

जिन में औरते और बच्चे अधिक थे,अपनी जान से हाथ धो बैठे। इसे दक्षिण भारत का कुम्भ कहा जाता है। मजे की बात यह है कि मुख्य मन्त्री सब से पहले स्नान कर पुण्य कमाना चाहते थे और वह सुबह परिवार सहित 6 बजे ही स्नान करने पहुंचे थे। उनके इस पुण्य कमाने की चाह ने बाकी व्यवस्था को उथल पुथल का दिया।

देश में ऐसी घटनायें महीने में एक दो बार कहीं न कहीं हो ही जाती हैं। क्यों होती है न तो सरकार और न ही कोइ दूसरा यह जानने की कोशिश करता है। कयोंकि इस की सच्चाई को जानना हमारी धर्म निरपेक्षिता के नियमों के खिलाफ है। किसी की धार्मिक आस्था को आंच नहीं आनी चाहिये चाहे यह आस्था देश समाज को खत्म ही कर दे। जो मर गये उनको भारी धन की राहत दे दी जायेगी और बात खत्म हो जायेगी। कुछ दिनों में सब भूल जायेंगे क्योंकी कोई नई इस प्रकार की घटना ध्यान का केन्द्र बन जायेगी।

1. गंगा और दूसरी मान्यता प्राप्त नदीयों का महत्त्व - गंगा एक बड़ी नदी है जो भारतवर्ष के बहुत से भूभाग में से होकर गुजरती है। देश की बहुत सी खेती-बाड़ी तथा अन्य जरूरतें गंगा के पानी पर निर्भर हैं। इसलिए देश के लिए गंगा का बड़ा महत्त्व है। ऐसा मान लेना कि गंगा में या किसी दूसरी नदी में डुबकी लगाने से पाप धुल जाते हैं निरी अज्ञानता है। पाप या पुण्य का फल तो भोगे बिना नहीं मिटता। यही न्यायकारी प्रभु का अटल विधान है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।। (मनुस्मृति 5-3)

अर्थ - जल से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या से और तप से (सब प्रकार के कष्ट उठाकर भी धर्म का आचरण करने से) जीवात्मा पवित्र होता है और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है।

2. तीर्थ - 'जना यैस्तरन्ति तानि तीर्थानि' अर्थात जिन करके मनुष्य

दुखों से तरें उनका नाम तीर्थ है। वेद आदि सत्य शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, योगाभ्यास, परोपकार, सत्य का आचरण, ज्ञान-विज्ञान आदि शुभ गुण दुखों से तारने वाले हैं, अतः ये तीर्थ हैं। नदियों में डुबकी लगाना तीर्थ नहीं वल्कि इस से तो हम उन्हें गन्दा और मैला कर देते हैं।

3. वह परमात्मा सर्वत्र व्यापक है। इस गतिशील संसार में जो कुछ भी है उस सब में ईश्वर का वास है। ऐसे में उस ईश्वर को किन्ही खास स्थानों पर दर्शन करने जाना न केवल मूर्खता है बल्कि ईश्वर का धौर अपमान और पाप है।

आर्य समाज की यही मान्याता है पर मुश्किल यहां आ जाती है कि आज आर्य समाज वाले यह सब कहने से डरते हैं और साहस नहीं रखते कारण उनके अपने परिवार के ही अधिक लोग इन पाखण्डों के शिकार है।

दूसरी घटना

दूसरी घटना मेरी छोटी बेटी की सहेली के परिवार में घटी———————हुआ ऐसे कि उसके नाना नानी लखनउ से उनके पास रहने आये थे। नाना काफी बृद्ध थे और उनकी अचानक मृत्यु हो गई। बात दाह संस्कार की आई तो उनकी नानी ने कहा वह चण्डीगढ़ मे दाह संस्कार कर उन्हें नरक में नहीं भेजना चाहेगी। वहां लखनउ से उनके लड़को ने भी आदेश दे दिया कि दाह संस्कार लखनउ में ही होगा।

ऐसे में मेरी बेटी की सहेली के पिता जी जो कि मध्यम आय वर्ग के हें और काफी बड़े परिवार को सम्भालते हैं 30 हजार रूपय खर्च कर ऐम्बूलैंस में उनका पार्थिव शरीर लखनउ भेजा। एक मध्यम आय वर्गके लिये 30 हजार रूप्या बहुत बड़ी राशी होती है जिससे पूरे महीने का खर्च चलता है। जरा सोचिये मृतक शरीर तो मिटटी है। क्या फर्क पड़ता है मिटटी को चण्डीगड़ में जलाया या लखनउ में। पर हमारे अन्धविश्वास हमें ठीक निर्णय नहीं लेने देते।

इसी सन्दर्भ में मझे एक और घटना याद आती है। बात 2002 की है। मैं किसी काम से बनारस के निची बाग में किसी दुकान में बैठा हुआ था। मेरे देखते ही देखते आधे घंटे में उस दुकान के आगे से 7 शव यात्रायें गुजर गई। मैने दुकान के मालिक जिनका नाम पांडे जी था पूछा——पांडे जी ऐसा लगता है आपके यहां कोई त्रासदा हो गई है । सात व्यक्तियों के शव आधे घंटे में ही यहां से गये हैं। पांडे जी बोले——त्रासदा तो कुछ नहीं हुई पर यह सड़क एक ऐसे शमशन घाट को जाती है जिसकी बहुत मान्यता है। माना जाता है कि यदि मृतक का दाह संस्कार वहां किया गया तो वह सीधा स्वर्ग जाता है। इस लिये लोग दूर दूर से मृतक को दाह संस्कार के लिये यहां ले कर आते है। आप सोच ही सकते हैं कि 100 मील से मृतक को संस्कार के लिये लाने के लिये कितना धन और समय खर्च हो जाता हैं। यही कारण है कि हमारा देश छोटे छोटे देशों के मुकावलें में भी बहुत पीछे है।

तीसरी घटना

पंजाब में मोगा के एक गांव में घर से भागा एक मजदूर 22 साल तक एक धार्मिक बाबा बनकर रहता रहा और अन्त में पांच पढें लिखे व्यक्तियों कि जो कि उसके अनुयाई थे उनकी हत्या कर अपनी आत्महत्या कर ली।

भारत वर्ष अगर एक हज़ार वर्ष तक गुलाम रहा व अभी भी समाज के बड़े भाग की हालत दयनीय है तो उसके लिये सब से अधिक जिम्मेवार है, एक साधारणतया प्रयोग किया जाने वाला यह वाक्य '' अपनी श्रद्धा की बात है'''' It is a matter of one's faith.

इस 'आस्था' के नाम पर ही यहां बहुत से बाबे, गुरू, योगी, भगवान , महाराज, ढोंगी, बापू लोगों को लुभाने और hypnotise करने में लगे रहते हैं और मन से अशांत मूर्ख जनता उस जाल में फंसती जाती है।

इस श्रद्धा के नाम पर जितने घिनोने, नीच व मूर्खतापूर्ण कार्य हमारे देश में किये जाते हैं उतने शायद किसी और देश में नहीं किये जाते। इन का तेजी से पनपने का बड़ा कारण है कि धर्मनिर्पेक्षिता का बहुत ही गलत अर्थ निकाल कर राजनैतिक दल अपने वोटों के लिये किसी को भी श्रद्धा के नाम पर किये जा रहे शोशन व लूट फसूट के विरूध आवाज नहीं उठाने देते। इस मामले में सभी दल एक हैं। एक ही तर्क लिया जाता है—— '' लोगों की अपनी श्रद्धा की बात है''

भारतीय समाज के सब से बड़े समाज सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनके बनाये 19वी सदी के आर्य समाज ने ऐसे पाखण्डों के विरूध बहुत जबरदस्त काम किया पर दुख यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का बनाया आर्य समाज खत्म हो गया है और उसकी जगह हमारे 20वी सदी के गुरूकुलों ने हमारी आर्य समाजों को संस्कृत की पाठशालायें और यज्ञशालायें बना कर रख दिया हैं। ये गुरूकुलों के आचार्य अमेरिका कनेडा तो भाग कर जाते हैं

क्येंकि वहां डालर में कमाई होती है। पर हिन्दुस्तान में जहां इतना पाखंड फैला हुआ है वहां जाना तो दूर की बात है कोई भंतसना तक नहीं करता। क्योंकि उसके लिये साहस चाहिये ओर समय देना पड़ता है। मोटी दक्षिणा नहीं मिलती।

वैदिक थोटस पत्रिका ऐसे अन्धविश्वासों के विरूध आवाज उठाने के लिये शुरू की गई है। हम उन्ही सभी का बहुत आदर करते हैं जिन्होने ऐसे अन्धविश्वासों और पाखण्डों के विरूध आवाज उठा कर भारत का भला किया।

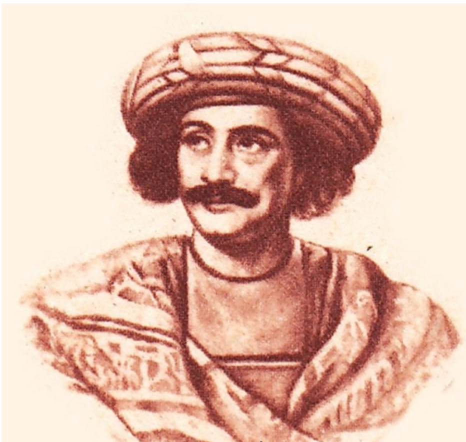

राजा राममोहन राय

चाहे वे महर्षि दयानन्द सरस्वती हों या गुरू नानक देव या राजा राममोहन राय और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर या लार्ड विलियम बैंटिक या 21वी सदी के **नरेन्दर डाभोलकर।**

इन चार बातों को मानकर आप ऐसी दुर्घटनाओं से बच सकते है।

2. ईश्वर एक है सर्वत्र व्यापक है, न उसका आकार है न ही जन्म लेता है।। कण कण में समाया हुआ है। आपके अन्दर भी है। बात अन्दर झांकने की है। आप ध्यान उपासना द्वारा उस को पा सकते है।ऐसे में उस ईश्वर को किन्ही खास स्थानों पर र्दशन करने जाना न केवल मूर्खता है बल्कि ईश्वर का घौर अपमान और पाप है।

3. मनुष्य को अपने किए हुए कर्मों का फल अवश्यमेव ही भोगना पड़ता है, चाहे इस जन्म में या अगले जन्म में। अच्छे कर्म का फल अच्छा होगा और बुरे कर्म का बुरा। बिना भोगे इससे कोई बच नहीं सकता और न कोई धर्मगुरू व मत प्रवर्तक आदि भी कर्म–फल भोग से किसी को बचा सकता है। न ही कहीं डुबकी लगाने से या खास जगह के दर्शन करने से पाप का प्रभाव टल सकता है।

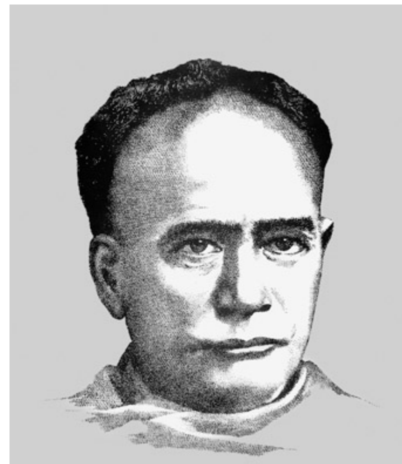

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

4. हस समय और हर दिन अच्छा है। ज्योतिष **आदि मूर्खो की विद्या है और मूर्ख की इस में विश्वास करते है।**

5. पुरूषार्थ करने से ही सभी कार्यो की सिद्धि होती है। केवल कल्पना करने से नहीं। और न ही विषेश अंगुठी, तावीज पहनने से या दरगाहों पर जानने से। जिस देश की आधि टी वी लैनलों पर सारा दिन यही दिखाने की छूट हो उस देश का कैसे भला हो सकता है। केवल यह कहने से कि हम चीन का स्थान ले लेगें हम चीन देश जैसे नहीं बन जायेंगे। पहले हम इन सैंकड़ों तरह के अन्धवियवासों से तो छूंटे।

We must learn to conserve time — 24 hours are more than enough to do whatever you need to do. Time is the most precious gift in our possession, if only we use it well.

हमें समय की बचत पर बल देना चाहिये। दिन में 24 घंटे बहुत होते हैं। इस में जो भी आप करना चाहें कर सकते है।

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन्दगी में हर बात घटना या दुर्घटना नहीं, ईश्वर की ईच्छा है

नीला सूद

कैंसर के बहुत बड़े डाक्टर को एक बहुत वड़ा सम्मान देने के लिये आमन्त्रित किया गया था।

स्वभाविक तौर पर डाक्टर बहुत प्रसन्न और उत्तेजित था क्योंकि इस दिन के लिये उसने सारा जीवन मेहनत की थी। वह किसी भी हालत में इस सम्मान को प्राप्त करने के लिये उस शहर मे पहुंचना चाहता था जहां उसे इस सम्मान से सुशोभित किया जाना था और उसने हवाई जहाज की उड़ान की टिकट की बुकिंग कर दी।

परन्तु हवाई जहाज के चलने के कुछ देर बाद ही हवाई जहाज मे खराबी आ गई और उसे बीच में ही उतारना पड़ा। चिन्तित डाक्टर ने वहां पर पूछताछ की तो पता चला कि हवाई जहाज को ठीक होने में एक दिन लग सकता था और अगली उड़ान भी 12घंटे बाद थी । ऐसे में उसने कार द्वारा बाकी सफर तय करने का निश्चय किया क्योंकि थोड़ी ही दूरी रह गई थी जिस में कि चार घंटे के करीब ही लग सकते थे।

जैसे ही कार द्वारा उसने आधा सफर तय किया था तेज हवाओं के साथ बारिश प्रारम्भ हो गई और कार बीच मे ही फंस गई। अब डाक्टर विश्वस्त हो गया था कि वह उस सम्मान को प्राप्त करने के लिये किसी भी हालत में नहीं पहुंच सकेगा। ऐसे में भूख से परेशान वह पास के गांव के एक मकान में गया और दरवाजा खटखटाया। एक युवती ने दरवाजा खोला । डाक्टर ने उसे सारी बात बताई तो युवती ने उसे अन्दर बुला लिया और चाय भोजन की व्यव्स्था करने के बाद उसे कहा कि जब तक मौसम ठीक नहीं हो जाता वह वहां आराम कर सकता था।

जब वह आराम कर रहा था तो साथ वाले कमरे से लगातार प्रार्थना की आवाज आ रही थी। वह अपने आप को रोक न सका और दरवाजा खोल कर देखा कि वह औरत गा गा कर प्रार्थना कर रही थी और बीच–बीच में पास में ही सो रहे शिशु को निहार लेती, थप–थपा देती। उसकी प्रार्थना खत्म होने का नाम ही न लेती।एक बार खत्म करती , शिशु को निहार लेती और फिर शुरू कर देती। डाक्टर न खत्म होने वाली प्रार्थना की आवाज से अब कुछ परेशान भी महसूस कर रहा था।

डाक्टर उसके इस व्यवहार से हैरान था और जब उसकी सबर टूट गई तो उसने युवती से पूछ ही लिया कि यह सब क्या हो रहा है?

युवती ने कहा कि वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही है। डाक्टर ने सोचा कि इस गाांव में रहने वाली साधारण महिला को उसे ठीक वस्तुत बात बतानी चाहिये और कुछ सोच कर उस महिला से बोला––क्या तुम साचती हो कि बार बार इस तरह प्रार्थना करने से ईश्वर सुन लेगा और यहां आ जायेगा। हों, यह पास में जो बच्चा है यह कौन है जिस को निहार कर तुम बार बार प्रार्थना कर रही हो।

उस महिला ने डाक्टर की बात सुनकर जो कहा वह इस पकार था––जो बच्चा सोया हुआ है वह उस का बेटा है

जो कि एक खास किसम के कैंसर रोग से पिड़ित है। एक बहुत मशहूर कैंसर का डाक्टर मार्क है जो कि मेरे बच्चे को ठीक कर सकता है। पर न तो उस तक पहुंचने के वह सक्षम हैं और न ही वह उसकी फीस दे सकती है। मैं ईश्वर से बार बार प्रार्थना करती रहती हूं । अभी तक तो ईश्वर ने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी है पर इस से मेरे विश्वास कोई कमी नहीं आई है । मुझे विश्वास है कि एक दिन ईश्वर ऐसी लीला रचेगा कि मेरे बच्चे का ईलाज सम्भव हो जायेगा।

एकदम हैरान और अचम्भित वह डाक्टर उस महिला को देख रहा था और उसकी आंखों से अश्रुधारा वह रही थी, क्योंकि वही डाक्टर मार्क था। जब उसने पिछले 24 घंटे की घटनाओं को देखा तो उस के मुंह से एकदम निकला–––ईश्वर तेरी महिमा निराली है। ईश्वर ने न केवल उस महिला की प्रार्थना को सुना बल्कि उसे भी भौतिक संसार की चमक दमक से बाहर निकाल दिया। उसे मालुम हो गया दुआ, प्रार्थना मे

असीम शक्ति है। इसलिये सदैव मान कर चलें –– **जिन्दगी में हर बात घटना या दुर्घटना नहीं, ईश्वर की ईच्छा है**

Kindness is the language which the deaf can hear and blind can see

Walking with the friend in the dark is better then walking alone in the light

रक्षा बन्धन के दिन बहने भाई को नई शपथ दें

जैसा हम जानते हैं रक्षा बन्धन के दिन भाई अपनी बहन की रक्षा की शपथ लेता है । हमारा इतिहास इन कहानियों से भरा हुआ है। मैं यह भी नहीं कह सकता कि आज के समय में यह अच्छा उदेश्य कितना कारगर (relevant) रह गया है। पर इस बदले हुये समय में जब हमारी महिलायें असुरक्षित महसूस कर रही हैं तो हर महिला को चाहिये कि वह अपने भाई को एक औरश्शपथ भी दे ।

क्या है वह शपथ––''कि तुम सभी महिलाओं को सम्मान करोगे। महिला वर्ग के लिये दिल में इज्जत रखोगे और लड़का लड़की में किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रखोगे। जीवन की यात्रा में अपने को अपनी पत्नि या होने वाली पत्नि से उंचा नहीं समझोगे और किसी भी प्रकार से पत्नि या उस के माता पिता से अपे़क्षा नहीं करोगे।

जब व्यक्ति ने समझ कर यह शपथ ले ली तो भारत की महिलायें अवने आप सुरक्षित हों जायेंगी जिस में कि शपथ लेने वाले की बहन भी शामिल है। आज रक्षा बन्धन में ऐसी ही शपथ की आवश्यकता है।

अनोखे अतिथि

अरविंद कुमार साहू

सुदूर दक्षिण स्थित केरल प्रांत के रामेश्वरम मे एक छोटा सा गाँव था, जहाँ मछुवारा समुदाय के अनेक लोग रहते थे। समुद्र में मछलियाँ पकड़ना और किराए पर नावें चलाना रोजी रोटी का मुख्य जरिया था। सभी मिलजुल कर रहते थे। इन्ही के बीच संघर्षों में पलने वाला एक बच्चा अपने सपनों को तूल देने की कोशिशों में लगा था। वह बच्चा रेलवे स्टेशन से अखबार लाकर सड़कों पर बेचने लगा। खर्च तो निकला ही, पर अखबारों के पढ़ने से उसका ज्ञान, जिज्ञासा और सोच और बदली। उस बड़े होते बच्चे को अनेक लोगों के साथ दो लोगों का विशेष सहयोग मिला। एक था वहाँ का मोची, जो उसके जूतों का ध्यान रखता और उस बच्चे के सपनों को चमकाने में कोई कमी नहीं छोड़ता था। दूसरा वहाँ का एक दर्जी । इस लंबी यात्रा में गाँव के लोग, वह मोची और दर्जी रोज, हर परिस्थिति मे उसे खाना खिलाते और बच्चे के बड़े होते सपनों को थकान और कमजोरी से बचाने मे सहयोग देते। जब कालेज में प्रवेश शुलक जमा करने की बारी आती है तो बहन अपने हाथ का कंगन बेच कर उसकी इस आवश्यकता को पूरा करती है।

जीवन की गाड़ी धकेलते हुए बच्चा किशोर बना, फिर युवावस्था के पंख लगाकर खुले आकाश मे उड़ चला। अपनी अदभ्य जिज्ञासा के बल पर उसने अपने सपनों को आकार दे दिया। उनमे सफलता के रंग भर दिये। उसका कद इतना बड़ गया कि संघर्षों के पहाड़ बौने हो गये। सफलता की कहानियाँ समन्दर जैसी फैलती चली गई। देश–दुनिया में उसका रुतबा, उसकी हनक कायम हो गई। ईश्वर आकाश में सच्चे मन से उड़ने का सपना देखने वालों को सफलता के पंख जरूर देता है। वही बच्चा अब जानामाना वैज्ञानिक था। और 2002 में वह भारत के सब से बड़े ओहदे राष्ट्रपति के पद पर सुशोभित हुआ।

इस लंबी यात्रा में गाँव के लोग, वह मोची और दर्जी यह उम्मीद भी न करते थे कि इस शिखर पर पहुंचने के बाद उस बच्चे को वे छोटे–छोटे गरीब और दलित लोग याद भी होंगे।

राष्ट्रपति बनने के बाद एक महाराजा की भांति पहली बार अपने गृहराज्य तामिलनाडू पहुंचा तो फिर एक चमत्कार सबकी प्रतीक्षा कर रहा था। विशालकाय और सुंदर राजभवन में उसके स्वागत–सत्कार के भव्य इन्तजाम थे। इतना भव्य इन्तजाम कि आम आदमी तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। लेकिन इस अवसर पर यहाँ बुलाये गये दो मुख्य अतिथि तो अपने स्वागत सत्कार को कल्पना भी मानने को तैयार न थे। वे अपने शरीर को बार–बार चिकोटी काट कर यथार्थ को समझने का प्रयास कर रहे थे। पर सत्य तो सत्य था जिसे कोई भी झुठलाने की हिमाकत नहीं कर सकता था। वहाँ हर व्यक्ति आश्चर्य चकित था। महामहिम के विशेष निर्देश पर आमंत्रित किए गये ये दोनों विशेष अतिथि थे वही मोची और दर्जी ।

और जानते हो कि रामेश्वरम का वह छोटा बच्चा कौन था? निसन्देह, वह भारत के मिसाइल मैन से राष्ट्रपति बन चुके डा ए पी जे अब्दुल कलाम ही थे, जिनका सारा जीवन ऐसे प्रेरक प्रसंगों से भरा पड़ा है। एक दिन देश के सबसे बड़े और ताकतवर सत्ता के केंद्र राष्ट्रपति भवन से खबर आई कि वहाँ बहुत बड़ा जलसा है, जिसमें उस बड़े हो चुके बच्चे के पारिवारिक सदस्यों समेत गाँव के लगभग पचास लोगों को बुलाया गया है। सब भौंचक थे, अभिभूत थे, इस राजसी मेहमाननवाजी से। किसी ने भी इस तरह से यहाँ पहुँचने का सपना तक नहीं देखा था। लेकिन सब कुछ सपने से भी ज्यादा सच्चा और अच्छा था। उन सबको उसी गाँव के बच्चे ने बुलाया था, जो अब इतना बड़ा हो गया था कि दुनिया के हर हिस्से तक उसकी परछाईं पहुँच गई थी। लोगों ने जमकर खाया पिया, झूमे–नाचे, जिंदगी का असली सुख अनुभव किया और आनन्द पूर्वक अपने गाँव को लौट गए। अब उन्हें भरोसा हो गया था कि ईश्वर सचमुच आकाश में सच्चे मन से उड़ने का सपना देखने वालों को सफलता के पंख जरूर देता है।

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।

जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें

पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। Book is in English

कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। Stories are on various aspects of human life.

नीला सूद, भारतेन्दु सूद

0172–2662870, 9217970381

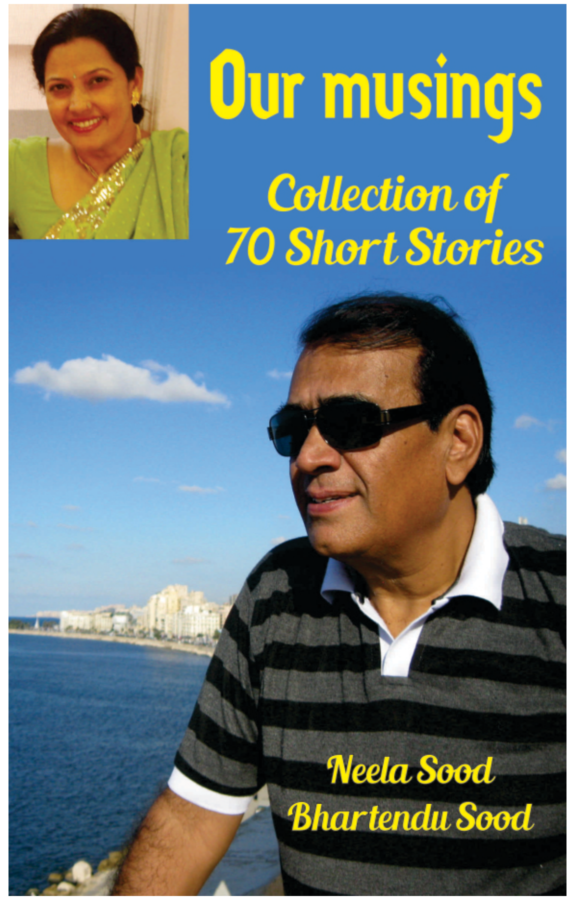

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

Youth is not a matter of age, it is a condition of the mind. If you are receptive to new ideas, and prepared to perform new experiments in the laboratory of life, you will always remain young. The spirit never grows old, it is only the body that ages. If we fear less, hope more, eat less, breathe more, hate less, love more, we will never age.

जवानी उमर नहीं पर आपके मन की स्थिती है। यहि आप अच्छे विचारों को मन में आने देतें है और उनका जीवन में प्रयोग कर सकते हैं तो आप जवान ही रहेंगे। वेद कहते हैं अच्दे विचारों को सब जगह से आने दें ओर स्थान दें। आत्मा न तो बूढ़ी होती है न ही मरती है, केवल हमारा शरीर बूढ़ा होता है। यदि हम भय मुक्त रहें, सपने लेना जानते हों, खायें कम, सांस अधिक लें, दूसरों के प्रति घृणा कम कर प्यार बढ़ाते जाये ंतो आप मानसिक रूप से बूढ़े कभी नहीं होंगे।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

In sunset years, discover the joy of giving

Ira Pande

Most senior citizens become dreadful bores; their preoccupation with themselves is so intense that they are blind to the joys and sorrows of the world around them

Don't turn your back to social responsibility.

I often wonder why people do not think positively as they grow older or look at ways of making their life more meaningful. On the contrary, I find that as they age, most senior citizens become dreadful bores; their preoccupation with themselves is so intense that they are blind to the joys and sorrows of the world around them. My neighbours, many of them getting frailer and older, often drop in to complain of how they can no longer cope with their life's burdens. The blame is always placed on callous, uncaring children (their spouses, actually), thieving, unreliable home help, aches and pains... the list is quite exhaustive (and exhausting). None of them lacks money and all of them are educated and capable people. Yet it never strikes them that they could start looking beyond their navels and try and reach out to those less fortunate than themselves.

Mother Teresa once said that a person used to complain of having no shoes until he met someone who had no feet. Today, my heart is lighter for having read of the wonderful endeavour of a middle-class man in Noida who has started a kitchen to feed the poor and hungry. His kitchen serve a ghee-scented dal-chawal meal for Rs 5 to those who cannot afford to pay much more and those (like rickshaw-wallahs) who cannot cook a meal at home, simply because they do not have one. It will cost just Rs 2,500 to buy the dry rations for a day's quota, he says, and many have already offered money or help in cooking and cleaning at the kitchen. He charges Rs 5 simply because pride often prevents the poor from availing free food every day. If this takes off, then he plans to start similar kitchens all over the city. The venture is not unlike Amma's Kitchen movement in Tamil Nadu that feeds hundreds of poor and needy people tasty, clean and wholesome food for a nominal charge.

In Punjab, the Gurus started the practice of a free langar to break down caste barriers and encourage community bonding. I am sure that eating at a community kitchen will also go a long way in ensuring that it becomes a widespread movement. After all, the hunger in the belly of a human being

does not change its intensity if you are a Muslim or a Hindu or belong to a high caste or low. I think this is a marvellous example of how many of our older people can be encouraged to come out of their self-centred misery and learn to give their time and help to the needy.

The same can be done for providing free remedial classes for children of illiterate parents. Helping a child with homework and explaining maths problems to a child should be a joy for those who miss not having their own grandchildren around. Looking after a neighbourhood park by planting trees, bushes and plants and watering and weeding them regularly can compensate for not having a garden of one's own in an apartment complex. The list of how one can use one's time constructively is endless.

Sadly, philanthropy is not an Indian virtue and neither is volunteer work. And yet, time and again, we see how society benefits when citizens shoulder the task of filling in the gaps left by an uncaring state or municipality. In Bangalore, the citizens have taken the Swacchh Bharat Abhiyan as a tool to clean up their neighbourhood. Instead of whining day after day about how corrupt the government system is, why not ensure that the workers employed by them are made responsible by supervising their work?

Fed up with traffic violations? Look how the lollipop ladies in the UK have taken on the job of ensuring that the roads outside schools and pensioners' homes are supervised to keep traffic orderly.

In Chandigarh, I can cite the example of the Blood Bank Society that was set up entirely by volunteers. This wonderful endeavour led to the cleanup of the sharks and vampires who literally sucked the life blood of poor patients by charging exorbitant fees for a bottle of blood of dubious quality. The Spicmacay movement is another example that changed the mindset of the young with regard to their traditional arts and music. The Akshay Patra is yet another movement that supplies clean, wholesome food to schools all over Maharashtra for the midday meal provided at government schools and anganwadis.

The short point is that if there is a will, there is a way. We all love to complain of what we do not have but how many of us are grateful for what we have, even if it is a pair of working hands and reasonable health? Trust me, there is no greater joy than that of giving. Putting a smile on the face of a person whom you have helped is more than any payment in gold coins. If only we would all (particularly the doomsday forecasters of our media) focus on what can be done and is being done instead of encouraging everyone to fight like cats and dogs, what a wonderful time we can look forward to!

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

बुद्ध का मुक्ति मार्ग और हिंदू धर्म में मोक्ष मार्ग

सीताराम गुप्ता,

आचार्य सत्यनारायण गोयंका कहते हैं:

भोगत–भोगत भोगते बंधन बंधते जायं

देखत–देखत देखते बंधन खुलते जायं।

कैसा होता है देखना और किसको देखना? देखने मात्र से ऐसे कौन से बंधन हैं जो खुल जाते हैं? जे कृष्णामूर्ति कहते हैं कि द्रश्टा ही दृश्य है तो क्या स्वयं द्वारा स्वयं को देखना ही बंधनमुक्त होना है? जी हाँ, स्वयं द्वारा स्वयं को देखना ही मुक्त होने का मार्ग है और इसी देखने का नाम है 'विपष्यना'। आत्म–निरीक्षण की प्रक्रिया द्वारा स्वयं को और स्वयं के माध्यम से वस्तुओं और स्थितियों को उनके यथार्थ रूप में देखने की योग्यता ही 'विपश्यना' है।

हिंदू धर्म में मोक्ष की प्राप्ति अनिवार्य मानी गई है। जन्म और मृत्यु के बंधन से मुक्त होना मोक्ष माना गया है और इसके लिए ईश्वर की कृपा पाना अनिवार्य है। ईश्वर की कृपा पाने लिए अनिवार्य है भक्ति मार्ग का अवलंबन लेकिन बौद्ध मत के अनुसार मुक्ति के लिए किसी ईश्वरीय अथवा दैवी अनुकंपा की आवश्यकता नहीं। बौद्ध मत के अनुसार वस्तुओं और स्थितियों को उनके यथार्थ रूप में देखने की योग्यता उत्पन्न होना ही मुक्ति अथवा मोक्ष है और इसे ही निर्वाण कहा गया है। स्वयं को तथा संसार की सारी वस्तुओं को मात्र देखना और उनके प्रति राग–द्वेश का भाव न रखते हुए आगे बढ़ जाना यही साधना निर्वाण की प्राप्ति में सहायक है। गीता में वर्णित **'समत्वं योग उच्यते'** की तरह समता भाव में स्थित होना ही निर्वाण है।

संसार अथवा संसार की वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप को जानने के लिए आवश्यक है स्वयं के वास्तविक स्वरूप को जानना। स्वयं को जान लेंगे तो संसार को जान लेंगे तथा संसार को जान लेंगे तो स्वयं को और अधिक अच्छी प्रकार से जानना संभव हो सकेगा क्योंकि यथा पिंडे तथा ब्रह्माडे। यही जानने की एक विधि है विपश्यना। विपश्यना में सबसे पहले हम केवल श्वास के आवागमन पर ध्यान केंद्रित करने का अभ्यास करते हैं जिसे 'आनापान' कहते हैं। आनापान के अभ्यास के बाद 'विपश्यना' अर्थात् स्वयं का मानसिक निरीक्षण करने की प्रक्रिया प्रारंभ होती है। स्थूल से सूक्ष्म अंतरावलोकन की प्रक्रिया है 'विपश्यना'।

विपश्यना की पहली कड़ी है आनापान जो बहुत ही सरल है। किसी भी आरामदायक स्थिति में बैठकर कोमलता से आँखें बंद कर लें। कमर और गर्दन सीधी रखें और अपना सारा ध्यान अपने श्वास के आवागमन के निरीक्षण पर लगा दें। इसमें करना कुछ भी नहीं है मात्र श्वास प्रक्रिया का अवलोकन करना है। श्वास के आने और जाने को देखना है। श्वास की गति को देखना है न कि उसकी गति को प्रभावित करना है। संपूर्ण ध्यान श्वास की गति को देखने में लगाना है। इस दौरान ध्यान श्वास प्रक्रिया के अवलोकन से हटकर अन्यत्र केंद्रित हो सकता है अथवा इधर–उधर भटक सकता है।

ध्यान विचलित हो सकता है लेकिन साधक को विचलित नहीं होना है। ध्यान भटक जाए तो पुनः शांत भाव से ध्यान को श्वास पर केंद्रित करना है। जो कुछ भी करना है अत्यंत शांत भाव से धीरे–धीरे करना है और हर परिवर्तन को ध्यान से देखते हुए करना है लेकिन परिवर्तन से किसी भी प्रकार से प्रभावित नहीं होना है। प्रारंभ में विपश्यना साधना में पहले पूरे तीन दिनों तक आनापान का अभ्यास ही करना होता है क्योंकि इससे ध्यान को केंद्रित करने में सहायता मिलती है। आनापान द्वारा मन पर नियंत्रण कर एकाग्रता का विकास करना सरल है।

(जहाँ तक आनापान तथा विप□यना के अभ्यास का प्र□न है विप□यना साधना केंद्रों में यह साधना पूरे दिन चलती है। प्रत्येक साधक प्रातःकाल से सायंकाल तक

आठ–दस घंटे का अभ्यास करता है। इस दौरान आहार भी दिन में एक बार और स्वल्प मात्रा में ही दिया जाता है। एक बार पूर्ण प्रशिक्षण के उपरांत साधक अपनी क्षमता अथवा आवश्यकता के अनुसार अभ्यास कर सकते हैं।)

जे. कृष्णामूर्ति भी यही कहते हैं कि मन पर नियंत्रण रखने का एक ही उपाय है कि उसे बाँधिये मत। उसे विचरने दीजिए। आप कुछ मत कीजिए सिर्फ साक्षी बने रहिए। इस प्रक्रिया में आप पाएँगे कि आपका उच्छृंखल मन शांत होकर आपके पास लौट आया है। उसके बाद आप आसानी से अपने मन को अपने नियंत्रण में कर सकते हैं। साधना का उद्‌देश्य भी तो यही है कि हमारा मन हमारे वश में हो। एक पालतू परिंदे की तरह मन की उड़ान पर हमारा पूरा नियंत्रण हो। मन ग़लत दिशा में उड़ान न भरे केवल सही दिशा में उड़ान भरे।

आनापान के बाद शुरू होती है विपश्यना। विपश्यना अर्थात् विशेष रूप से देखने की प्रक्रिया। विपश्यना शरीर के विभिन्न अंग–प्रत्यंगों के मानसिक निरीक्षण की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया प्रारंभ होती है सहस्रार से। सबसे पहले सहस्रार को ध्यानपूर्वक देखना है। एक बार उसका स्पंदन पकड़ में आ जाए तो उसका निरीक्षण कर फौरन आगे बढ़ जाना है। सहस्रार के बाद मस्तिश्क और चेहरे का अवलोकन। एक–एक अंग को ध्यानपूर्वक देखते हुए आगे बढ़ना है। कान, नाक, आँखें, होंट, गाल और चिबुक सबको ध्यानपूर्वक देखते हुए आगे बढ़ना है। जो जैसा भी है उसको देखना और आगे बढ़ जाना। बिना अच्छे–बुरे का निर्णय किए, बिना सुख–दुख का अनुभव किए बस देखना और आगे बढ़ जाना यही तो साक्षी भाव है। यही साक्षी भाव ही विपश्यना है।

(जहाँ तक सहस्रार का प्रश्न है यह हमारे मस्तिष्क के ऊपरी भाग में स्थित ऊर्जा का प्रमुख केंद्र है। हमारे शड्चक्रों में इसका विशेष महत्त्व है । रेकी साधना के अनुसार ब्रह्माण्डीय ऊर्जा हमारे सहस्रार द्वारा ही प्रवाहित होकर हमारे अन्य ऊर्जा केंद्रों तथा भारीर के अन्य भागों तक पहुँचती है।)

चेहरे के बाद गर्दन का अवलोकन और गर्दन के बाद कंधों और पीठ का अवलोकन। इसी तरह गर्दन के बाद दोनों बाहों से एक साथ ध्यान गुज़ारते हुए हाथों और हाथों की उंगलियों के पोरों तक की मानसिक यात्रा। वापस गर्दन और गले को देखते हुए नीचे वक्षस्थल और उदर का अवलोकन। हृदय, यकृत और गुर्दों का अवलोकन तथा पाचनतंत्र का अवलोकन। इसके बाद सारा ध्यान कूल्हों पर। कूल्हों से नीचे उतरते हुए दोनों जंघाओं से ध्यान गुज़ारते हुए, घुटनों और पिंडलियों से होते हुए टखनों, एड़ियों और दोनों पैरों के तलवों और पूरे पंजों का अवलोकन तथा हर उँगली और उँगली के पोरों का अवलोकन।

हर स्पंदन को देखते हुए आगे बढ़ना, कहीं नहीं रुकना। पुनः सिर से लेकर पैरों की उँगलियों तक लगातार बार–बार ध्यानपूर्वक अवलोकन। अब इसका विपरीत क्रम प्रारंभ करना है। नीचे से ऊपर की ओर। इसका भी बार–बार अभ्यास करें। इसके बाद संयुक्त अभ्यास। पहले ऊपर से नीचे तथा बाद में नीचे से ऊपर एक साथ अभ्यास। इसके बाद दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ ध्यान से देखने का अभ्यास। पर्याप्त अभ्यास के बाद पुनः संयुक्त अभ्यास। इसके बाद आगे से पीछे तथा पीछे से आगे का अवलोकन। पहले गले, वक्षस्थल और उदर का अवलोकन, फिर अंदर के समस्त अंगों का अवलोकन तथा उसके बाद गर्दन, कंधों तथा पीठ का अवलोकन।

(दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ ध्यान से देखने से तात्पर्य है ध्यान की अवस्था में भारीर के विभिन्न अंगों–उपांगों का दाएँ से बाएँ तथा बाएँ से दाएँ एक–एक करके तथा बाद में समग्र शरीर का एकसाथ मानसिक निरीक्षण। इस स्थिति में जहाँ–जहाँ से ध्यान गुज़रता है वहाँ–वहाँ शरीर की जड़ता समाप्त होकर ऊर्जा का प्रवाह संतुलित हो जाता है।)

ऊपर से नीचे, दाएँ से बाएँ तथा आगे से पीछे और इसका विपरीत क्रम दोहराते हुए ध्यान से देखते– देखते मनुश्य को अपने वास्तविक स्वरूप का बोध होने लगता है। स्व का ज्ञान होना शुरू हो जाता है। देखते–देखते इस भौतिक शरीर की जड़ता, इसकी सघनता, इसका ठोसपन मिटता जाता है और शेष रह जाती है मात्र तरंगों की अनुभूति। पूरा शरीर, शरीर का हर अंग–प्रत्यंग मात्र तरंग रूप दृश्टिगोचर होने लगता है। यही विपश्यना है। ठोस शरीर को निरंतर तरंग रूप में परिवर्तित होते देखना ही विपश्यना है। एक बार अपने इस वास्तविक स्वरूप को जान लेंगे तो बाक़ी संसार को जानने में और उसके बाद जीते जी मोक्ष प्राप्त करने में अर्थात् मुक्त होने में कोई बाधा आ ही नहीं सकती। यही बुद्ध का मुक्ति मार्ग अथवा निर्वाण है।

ए.डी. 106–सी, पीतमपुरा दिल्ली–110034

फोन नं. 09555622323

Email : srgupta54@yahoo.co.in

कर्मयोगी कौन है

यह बात 2004 की हैं। मेरे मन में बदरीनाथ केदारनाथ जाने की इच्छा जागी ऋषिकेश पहुंचकर मैं सुबह ही बस में बैठ गया जब शाम के 4–5 बजे तो मुझे बस में लगातार 13 घंटे बैठने के बाद थकावट लगने लगी। हालांकि मैने टिकट लम्बी यात्रा का लिया था मैने बस से उतर कर यात्रा तोड़ने का निश्चय किया व एक रमणीक स्थान पर उतर कर पास के गाँव की और चल पड़ा। एक छायादार पेड़ के नीचे बैठकर अभी खाने की पोटली खोली ही थी कि पास के ही एक घर से आवाज़ आई ''यहाँ आकर खाना खा लीजियें'' घूम कर देखा तो यह आग्रह करने वाले 70 के करीब के एक बुजुर्ग थे। मैं भी इन्कार न कर सका और उनके कमरे में चला गया। उन्होने हाथ वगैरा धुलवाये, खाना गर्म कर दिया व साथ में चाय बना कर ले आये। थका हुआ था इसलिये इस सेवा से मन प्रसन्न हो गया कुछ बातचीत हुई।

मेरा विचार था कि मैं आराम करके रात को बस पकड़ कर निकल जाऊँगा पर उन सज्जन ने कहा कि आप जल्दी सुबहः निकलोगें तो यात्रा का आनन्द उठायेंगे। आप रात को मेरी इस छोटे से आश्रम में ही रह सकते है। मै भी उनके कहने पर रुक गया। वहीं एक तख्त पर मेरा इन्तजाम कर दिया। रात को वे दाल और चपाती बनाकर ले आये। सुबह मैं 5 बजे उठ गया वह सज्जन तब तक नहा धो कर पूजा करके तैयार थे। मैं निवृत होकर जब जाने लगा तो मैने श्रद्वा के रुप में 200 रुपया उनकें पैरों पर रखकर धन्यवाद किया व अन्तःकरण से ही यह शब्द निकले ''मुझे ऐसा लगा कि मै किसी स्वर्ग में रहा हूँ'' वे मेरे कन्धों पर हाथ रख कर पैसे वापस देते हुये बोले '' यह आप क्या कर रहे है। मैं उनके संकोच को समझ रहा था व बोला कि यह आपकी सेवा का मूल्य नही परन्तु आप यहां अकेले रहते है व धन तो सेवा के लिये चाहिये होता है इसलिये यह छोटी सी राशी दी है कल को किसी अैर के काम आयेगी।

उन्होने मुझे बैठने के लिये कहा व फिर बोले 'देखिये मैं एक विश्वविधालय से सेवानिर्वृत प्रौफेसर हूं धन की कभी कमी न थी बच्चे सब पढ़ लिख कर ऊँचे– ऊँचे पदों पर है। अगर धन से ही शान्ति मिलती तो यहाँ क्यों आता। यहां इस गाँव में रहता हूँ एक High School है वहां अवैतनिक तीन घंटे पढ़ाता हूँ व शाम को दो घंटे आस पास के बच्चों को गणित व विज्ञान की coaching देता हूं ताकि competition में अच्छा perform कर सकें। यह गांव वाले मेरी सभी जरुरतों का ख्याल रखतें हैं, मुझे कभी यह महसूस ही नही हुआ कि मैं अकेला हूं। आशा है आप यह बताने के बाद पैसे वापस जेब में रख लेंगे। मैं आप के साथ चल रहा हूँ। मुझे बस वाले पहचानते है वे बस रोक देंगे आपको काफी इन्तज़ार करना पड़ सकता है।

बहुत सी बाते किताबें पढ़ने से नहीं आती मुझे एक कर्मयोगी के दर्शन हो गये थे मैं समझ गया था कर्मयोगी कौन है स्वामी विवेकानन्द के शब्द में–

– कर्मयोगी वह है जो शांत हो कर काम मे लगा रहता है। यह नहीं कि वह फल की इच्छा नहीं करता पर फल के लिसे चिंता कभी नही करताा।वह मोह माया त्याग कर इस संसार में जीवन के कर्तव्य की पूर्ती मे लगा रहता है। वह जानता है कि भगवान का दिया यह मानव चोला बहुत मुश्किल से मिलता है इसलिये इस का एक एक क्षण कर्मशील होकर बिताता है। सफलता उसे बहुत खुश नहीं करती, असफलता उसे निराश

नहीं करती। हर हालत मे दूसरे की सहायता करने मे तत्पर रहता है चाहे वह स्वयम मौत के मुंह मे ही क्यूं न हो। चाहे लाखों बार ढगा जाये पर न चेहरे पर शिकुन आने दे और न ही मुहं से काई बात निकाले।

वह भले कार्य मे लगा रहता है पर किसी को भनक नहीं होने देता।

निंधन पर किये उपकार पर अंहकार नहीं करता और न ही उससे कृतज्ञता की अपेक्षा करता है बल्कि वह अपने आप को यह सोच कर कृतज्ञ महसूस करता है कि उसने मुझे कुछ देने का अवसर दिया

कर्मयोगी व्यक्ति की चारित्रिक निर्मलता और सादगी दूसरों को बिना कुछ कहें प्रभावित करती है। उसको अपने नाम के आगे 'महात्मा' इत्यादी अलंकार लगाने की आवश्यकता नहीं होती जों ऐसे कर्मयोगी से मिलता है वह ही उन्हे महात्मा के रुप में पाता है। ऐसे ही एक कर्मयोगी थे श्री एन0डी0ग्रोवर जिन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन डी0ए0वी0 शिक्षा अन्दोलत के लिये सर्मपित कर दिया। क्या कोई विश्वास कर सकता है कि सेवा निवृत होने के बाद उन्होने बिहार में जहां कोई डी0ए0वी0 विद्यालय नही था 100 शिक्षण संस्थाओं की अकेले घूम घूम कर स्थापना की। वह इतने सादे थे कि लोग उन्हे ''झोले वाला बाबा'' जी कह कर सम्बोधन करते थे। खद्दर का एक झोला जिसमें उनकी डायरी, तौलिया और एक कुर्ता पैज़ामा रखा होता था इसे लेकर ही वह हर जगह घूमते थे यही उनका साज सामान था इसी सादगी और चरित्र को देखकर लोग लाखों की धन ज़मीन दान दे देते थे।

हमारे शास्त्रों में कहा है **कर्मेन्द्रियैः कर्मेयोगमसक्तः स विशिष्टय**

With dermination and command over senses a true karmyogi embarks on the right path of action **संयम व** दृड़ संकलप द्वारा कर्मयोगी अपने लिये ठीक रास्ता अखतियार करने में सफल होता है।

वह कर्म करता हुआ जीता है पर कर्म करतें हुये कर्म में लिप्त भी नहीं होता।

वैदिक विचार

ईशावास्यमिदँ सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्ध्नम् ।।

जो कुछ दिख रहा जगत में,
सब में ईश समाया है,
त्याग भाव से जीवन जीना,
यह ढ़लती फिरती छाया है,
मेह माया के वशीभूत,
क्यों करता मेरा मेरा है,

भूल गया यह जगत बावरे,
चिड़िया रैन बसेरा है,
अति लोभ में कभी न फंसना,
ऋषियों ने फरमाया है,
किसके साथ गई बोलो,
नश्वर माया और काया है।

Managing Children from an early stage

Saguna Jain

Kids need to be taught how to control or manage their anger or their moods from a very early age. There are plenty of cases that one sees when toddlers throw tantrums in a public place, hit out at their elders, scream, crawl on the floor and throw things randomly in order to display their ire at something that has happened that has not been to their liking. It is unfortunate that the parents get blackmailed into listening to the kid and bowing down to his demands, thereby establishing a pattern and process to this entire exercise that becomes uncontrollable and unacceptable even by the society when the same kid grows up to be an adult.

It is important to thwart any such behavior right in its infancy. It might take some cajoling, counselling or even certain harsher measures. But it is better tackled with as soon as possible for time flies quickly and things and situations like these have a tendency to slip put of your hands inadvertently. In adulthood, the setting remains the same, only the characters change but the consequences of showing destructive tendencies become far more tangible.

In fact, the breakdown in the joint family system first and the unbelievable rate of divorces around us can be pretty much attributed to this phenomenon. **The kids today are brought up in an environment where they are given too much too soon, on a platter, and they are just not used to hearing a negative from anybody** whatsoever. They are neither used to listening to their parents, grandparents or their friends, peers or betters. Not following orders becomes a habit. Even though deep inside you know that the other person is right, the rebel inside you will forbid you from admitting that and you continue to stay in a state of defiance.

This then, unfortunately, carries with you even till your old age. You realize that you have become more cynical, negative and irritable than most of your peers and before you know it, your friends, family and colleagues have all distanced themselves from you and you are left all alone in this big bad world to fend for yourself. It is indeed a scary thought but it is happening around us all the time.

It is a known fact that negativity is palpable and if you do not like somebody, the vibrations carry and chances are that that person also would not be particularly fond of you. To have a pleasing disposition is absolutely important to find universal acceptance. It is not difficult; it is just a mental training that can be

achieved with just a little practice and major resolve. If you cry, you cry alone, but if you are happy, the world joins you for a laugh - it's true, try it!!

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

We are planning to open branch of orphanage Maharishi Dayanand Bal Ashram in Chandigarh.For that we require some space/rooms anywhere in Chandigarh.If you know of any place or person who can help us by providing some rooms then please let us know.We will be very grateful to you for your help.

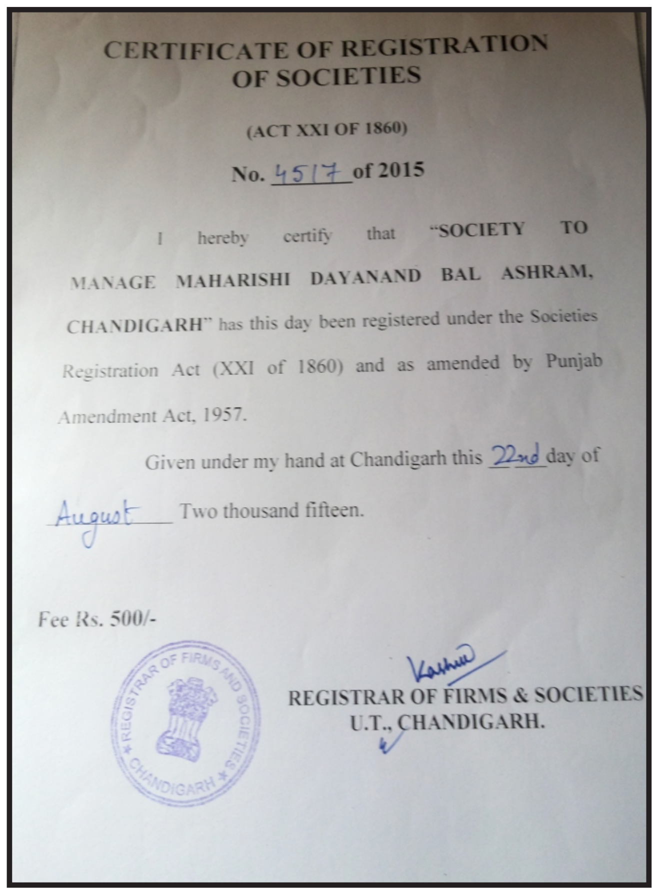

CERTIFICATE OF REGISTRATION OF SOCIETIES

(ACT XXI OF 1860)

No. 4517 of 2015

I hereby certify that "SOCIETY TO MANAGE MAHARISHI DAYANAND BAL ASHRAM, CHANDIGARH" has this day been registered under the Societies Registration Act (XXI of 1860) and as amended by Punjab Amendment Act, 1957.

Given under my hand at Chandigarh this 22nd day of August Two thousand fifteen.

Fee Rs. 500/-

REGISTRAR OF FIRMS & SOCIETIES
U.T., CHANDIGARH.

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

नरेन्द्र गुप्ता लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Vijay Kumari

Mata Chetanaya Devi

Ashok Khanduja

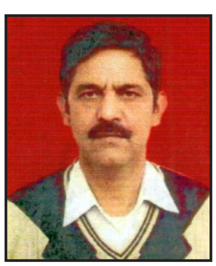

Krishan Kumar

Yogita Soni

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870